B.ed 1st year, Paper-C2, Unit-3

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जीवन परिचय :- डॉ० राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को तमिलनाडु के छोटे से गाँव तिरुमनी में ब्राह्मण परिवार में हुआ था, इनके पिता का नाम सर्वपल्ली विरास्वामी था, वे विद्वान ब्राह्मण थे। डॉ राधाकृष्णन का बचपन तिरुमनी गाँव में ही व्यतीत हुआ वहीं से इन्होंने अपनी शिक्षा की प्रारम्भ की आगे की शिक्षा के लिए इनके पिता जी ने क्रिश्चियन मिशनरी संस्था लुथर्न मिशन स्कूल, तिरुपति में दाखिला करा दिया।

आजाद भारत के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति के तौर पर डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का नाम भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा गया है, वे दर्शनशास्त्र का भी बहुत ज्ञान रखते थे, राधाकृष्णन प्रसिद्ध शिक्षक भी थे, यही वजह है कि उनकी याद में हर वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

डॉ० राधाकृष्णन के शैक्षिक विचार :-

देश - विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में वर्षों तक अपनी सेवाएँ प्रदान करने के पश्चात डॉ० राधाकृष्णन ने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों को परिपक्व एवं व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया। ये दर्शनशास्त्र के प्रतिष्ठित अध्यापक तो थे ही साथ ही ये विभिन्न आयोगों के सदस्य व अध्यक्ष रहने के

साथ-साथ तुलसीपति भी रहे हैं।

शिक्षा के माध्यम के विषय में इनके प्रमुख विचार निम्नलिखित हैं —

1. इन्होंने मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम स्वीकार किया है क्योंकि मातृभाषा में ही विचारों का आदान-प्रदान सरलता से हो सकता है।

2. मातृभाषा के साथ-साथ इन्होंने प्रादेशिक भाषा के महत्व को स्वीकार किया है।

3. अंग्रेजी भाषा को शिक्षण का माध्यम नहीं बनाना चाहिए, अंग्रेजी भाषा से पाश्चात्य संस्कृति को ही बढ़ावा मिलेगा।

4. अंग्रेजी भाषा सामान्य जनमानस के लिए उपयोगी नहीं है।

5. अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने पर विद्यार्थियों में सृजनशीलता तथा मौलिकता का विकास नहीं हो सकता। यह कार्य मातृभाषा में ही संभव है।

6. आधुनिक मनोवैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों में यह स्पष्ट किया गया है कि द्विभाषावाद से बालक का विकास नहीं हो सकता है। प्रारंभिक अवस्था में तो दो भाषाओं का ज्ञान हानिकारक है ही, बालक दो भाषा में से एक में भी सिद्धहस्त नहीं हो सकता। अतः शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए।

7. मातृभाषा के अतिरिक्त डॉ० राधाकृष्णन् ने संस्कृत भाषा का अध्ययन करना भी अनिवार्य माना। इनके अनुसार

"हमारी भारतीय संस्कृति का भण्डार संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध है।"

शिक्षा के उद्देश्य :-

डॉ० राधाकृष्णन ने जीवन के भौतिक एवं अभौतिक पक्षों को पृथक-पृथक महत्व दिया है। उन्होंने विचारों को समझने के पश्चात उनके अनुसार शिक्षा के लक्ष्यों को स्पष्ट किया जा सकता है। सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य निम्न-लिखित है।

शिक्षा के लक्ष्य

1. ज्ञान प्राप्त करना
2. स्वतंत्रता (इनके अनुसार व्यक्ति स्वतंत्रता से जीवन-यापन करें)
3. आत्माभिव्यक्ति का विकास (इनके अनुसार व्यक्ति को स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए शिक्षा दी जानी चाहिए।)
4. चरित्र निर्माण
5. आध्यात्मिक विकास
6. सामाजिकता का विकास
7. व्यक्तिगत विकास
8. व्यवहारिक ज्ञान का लक्ष्य

शिक्षण विधि :-

डॉ० राधाकृष्णन के विचार थे कि शिक्षा में जनतांत्रिक शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग किया जाय, जिससे बालक में जनतांत्रिक गुणों का विकास हो सके। ऐसी पद्धतियों से ही हम बालक में ऐसे गुणों का विकास कर सकते है जो देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष :-

डॉ० राधाकृष्णन के शिक्षा-दर्शन का मूल्यांकन करें तो सर्वप्रथम ये मानववाद के प्रबल समर्थक है। इन्होंने व्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्व दिया है। इनका कथन है कि, "मानव का व्यक्तित्व पवित्र वस्तु है।" व्यक्ति एवं समाज की तुलना की जाये तो इनके विचार से पहले व्यक्ति को महत्व दिया जाना चाहिए। इसी कारण ये व्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्व देते है। वस्तुतः यह बात इनकी मानवतावादी विचारधारा का प्रतीक है।